सूरह — एक कहानी

सूरह अल-क़सस

कहानियाँ

पूरा सफ़र — दुश्मन के अपने महल में पला —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 28 • 88 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

व नुरीदु अन नमुन्न 'अलल्-लज़ीनस्-तुज़्'इफ़ू फ़िल्-अर्ज़ि व नज्'अलहुम अइम्मतंव्-व नज्'अलहुमुल्-वारिसीन
5. और हम चाहते हैं कि जो ज़मीन में कमज़ोर कर दिए गए उन पर एहसान करें और उन्हें लीडर बनाएँ और उन्हें वारिस बनाएँ।

इन्ना रादूहु इलैकि व जा'इलूहु मिनल्-मुर्सलीन
7. बेशक हम उसे तेरे पास लौटा देंगे और उसे रसूलों में से बनाएँगे।

व अस्बह फ़ुआदु उम्मि मूसा फ़ारिग़ा
10. और मूसा की माँ का दिल ख़ाली हो गया।

रब्बि इन्नी लिमा अन्ज़ल्त इलय्य मिन ख़ैरिन फ़क़ीर
24. मेरे रब, जो भलाई भी तू मुझपर उतार दे, मैं उसका मोहताज हूँ।

इन्नक ला तह्दी मन अह्बब्त व लाकिन्नल्-लाह यह्दी मंय्यशा
56. बेशक तुम जिसे चाहो उसे हिदायत नहीं दे सकते, मगर अल्लाह जिसे चाहे हिदायत देता है।

कुल्लु शै-इन हालिकुन इल्ला वज्हह
88. हर चीज़ फ़ना होने वाली है सिवाए उसके चेहरे के।

एक मंसूबा पहले से एलान

बेटा, ये सूरह एक ऐसी सूरत-ए-हाल से खुलती है जो बिल्कुल ना-उम्मीद लगती थी — और फिर अल्लाह, कुछ होने से पहले, ठीक ठीक बता देते हैं कि वो क्या करना चाहते हैं।

'इन्न फ़िर्'औन 'अला फ़िल्-अर्ज़ि व ज'अल अह्लहा शिय'आ — बेशक, **फ़िरऔन** ने ज़मीन में **सरकशी** की और उसके **बाशिंदों को गिरोहों** में बाँट दिया — **यस्तज़्'इफ़ु ताइफ़तम्-मिन्हुम युज़ब्बिहु अब्ना-अहुम व यस्तह्यी निसा-अहुम** — उन में से एक गिरोह को **कमज़ोर** करते हुए, उनके **बेटों को ज़िबह** करते और उनकी औरतों को ज़िंदा रखते — **इन्नहू काना मिनल्-मुफ़्सिदीन** — बेशक, वो फ़साद करने वालों में

से था।'

बेटा, उसका तरीक़ा ग़ौर कीजिए: 'ज'अल अह्लहा शिय'आ' — उसने लोगों को गिरोहों में **बाँट** दिया। **ये हर ज़ालिम का पहला आला है**: आबादी को बाँट दो, गिरोह एक दूसरे के ख़िलाफ़ खड़ा कर दो, और टुकड़ों पर हुक्मरानी करो। और फिर उन में से सब से कमज़ोर को कुचल दो।

और फिर, बेटा, अल्लाह का जवाब आता है — और ये एक तय-शुदा इरादे के तौर पर बयान हुआ:

'व नुरीदु अन नमुन्न 'अलल्-लज़ीनस्-तुज़्'इफ़ू फ़िल्-अर्ज़ि — और हम चाहते हैं कि जो ज़मीन में कमज़ोर कर दिए गए उन पर एहसान करें — व नज्'अलहुम अइम्मतंव्-व नज्'अलहुमुल्-वारिसीन — और उन्हें लीडर बनाएँ और उन्हें वारिस बनाएँ — व नुमक्किन लहुम फ़िल्-अर्ज़ — और उन्हें ज़मीन में जमाएँ — व नुरिय फ़िर्'औन व हामान व जुनूदहुमा मिन्हुम मा कानू यह्ज़रून — और फ़िरऔन और हामान और उनके लश्करों को, उन्हीं के ज़रिए, वही चीज़ दिखाएँ जिस से वो डर रहे थे।'

बेटा, उस उलटाव की तकमील महसूस कीजिए। जिन लोगों को ज़िबह किया जा रहा है उन्हें **लीडर** और **वारिस** बनाया जाएगा। और ज़ालिम की अपनी एहतियातें ठीक वही नतीजा पहुँचाएँगी जिसे वो रोकने की कोशिश कर रहा था।

क्योंकि यही हुआ, बेटा। फ़िरऔन लड़कों को क़त्ल कर रहा था ताकि कोई लड़का उसके ख़िलाफ़ न उठे। और ठीक वही बच्चा जिस से वो डरता था **उसके अपने महल** में पला, उसकी अपनी मेज़ पर, उसके अपने ख़ज़ाने से, उसके अपने हुक्म से दूध पिलाया गया।

बेटा, ये सीखिए: **जब अल्लाह किसी चीज़ का फ़ैसला करते हैं, वो अक्सर उसे पूरा करने के लिए मुख़ालिफ़ के अपने हाथ इस्तेमाल करते हैं।**

उसे दरिया में डाल दो

'व औहैना इला उम्मि मूसा अन अर्ज़िईह — और हमने **मूसा की माँ** को **इल्हाम**

किया: **इसे दूध पिला** — **फ़-इज़ा ख़िफ़्ति 'अलैहि फ़-अल्क़ीहि फ़िल्-यम्मि** — और **जब तुझे इसका ख़ौफ़ हो तो इसे दरिया में डाल दे** — **व ला तख़ाफ़ी व ला तह्ज़नी** — **और मत डर और मत ग़म कर** — **इन्ना रादूहु इलैकि व जा'इलूहु मिनल्-मुर्सलीन** — **बेशक, हम इसे तेरे पास लौटा देंगे और इसे रसूलों में से बनाएँगे।**'

बेटा, इस के साथ बैठिए जो इस माँ से करने को कहा गया। सिपाही घर-घर बच्चे लड़कों को ढूँढ रहे हैं। और हुक्म है: अपने बच्चे को एक संदूक़ में रख कर दरिया में धकेल दो।

उसके जिस्म का हर जज़्बा इसके ख़िलाफ़ चीख़ता होगा। **दरिया वो जगह है जहाँ आप एक बच्चे को खोते हैं, बचाते नहीं।**

और अल्फ़ाज़ की तरतीब ग़ौर कीजिए, बेटा: हुक्म पहले आता है, और फिर तसल्ली — 'मत डर और मत ग़म कर' — और उसके बाद ही वादा। **उसे डरते हुए अमल करना था; सुकून इताअत के साथ आया, उस से पहले नहीं।**

'**फ़ल्तक़तहू आलु फ़िर्'औन लि-यकून लहुम 'अदुव्वंव्-व हज़ना** — तो फ़िरऔन के घरवालों ने उसे **उठा** लिया ताकि वो उनके लिए एक **दुश्मन** और **ग़म** का बाइस बने।'

बेटा, उस जुमले को देखिए। उन्होंने उसे मोहब्बत से उठाया — और आयत नतीजे को मक़्सद के तौर पर बयान करती है। उन्होंने समझा वो एक बच्चा गोद ले रहे हैं; **वो अपनी सल्तनत का अंजाम घर ला रहे थे।**

और फ़िरऔन की अपनी बीवी, आसियह (रज़ि0), ने कहा: '**क़ुर्रतु 'ऐनिल्-ली व लक** — मेरे और तुम्हारे लिए **आँखों की ठंडक। ला तक़्तुलूह — इसे क़त्ल मत करो** — '**असा अंय्यन्फ़'अना औ नत्तख़िज़हू वलदा** — शायद ये हमें फ़ायदा दे, या हम इसे बेटा बना लें — **व हुम ला यश्'उरून** — **और उन्हें शु'ऊर न था।**'

बेटा, वो आदमी जिसने हज़ारों बच्चों का क़त्ल किया एक को बचाने पर राज़ी कर लिया गया — उसकी अपनी बीवी से, उसके अपने घर में।

'**व अस्बह फ़ुआदु उम्मि मूसा फ़ारिग़ा** — **और मूसा की माँ का दिल ख़ाली हो गया** —

इन कादत ल-तुब्दी बिही लौला अर्-रबत्ना 'अला क़ल्बिहा लि-तकून मिनल्-मुअ्मिनीन — वो क़रीब थी कि **इसे ज़ाहिर** कर देती, अगर हम उसके **दिल को न बाँधते**, ताकि वो मोमिनीन में से हो।'

बेटा, 'फ़ारिग़न' — **ख़ाली**। उसका दिल अपने बेटे के सिवा हर चीज़ से ख़ाली हो गया। जिसने भी एक बच्चा खोया, या किसी के लिए डरा, वो ठीक उस ख़ालीपन को जानता है — जहाँ कोई दूसरा ख़याल दाख़िल नहीं हो सकता।

और 'रबत्ना 'अला क़ल्बिहा' — हमने उसके दिल को **बाँधा**, जकड़ा, मज़बूत किया। क्या जुमला। बेटा, **जब एक दिल बिखरने वाला होता है, अल्लाह उसे बाँध देते हैं।** दर्द हटा कर नहीं — दिल को जोड़े रख कर जब दर्द उस में से गुज़रता है।

यही वो है जो अपनी सब से बुरी घड़ी में माँगना है, बेटा: हमेशा ये नहीं कि सूरत-ए-हाल बदले, बल्कि ये कि वो तुम्हारा दिल बाँध दें ताकि तुम उसे झेल सको।

और वादा जल्दी पूरा हुआ: बहन टोकरी के पीछे गई, बच्चे ने हर दूध-पिलाने वाली इनकार कर दी, और उसने अपनी ही माँ का घराना पेश किया। '**फ़-रददनाहु इला उम्मिही कै तक़र्र 'ऐनुहा व ला तह्ज़न व लि-तअ्लम अन्न व'अ्दल्-लाहि हक़्क़ुन** — तो हमने उसे उसकी माँ के पास **लौटा** दिया ताकि उसकी आँख ठंडी हो और वो ग़म न करे, **और ताकि वो जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है।**'

बेटा, वो अपने बेटे से मिली **और** अपने ही बच्चे को दूध पिलाने की तनख़्वाह तक पाई। **यूँ अल्लाह वो चीज़ लौटाते हैं जो उनके सुपुर्द की जाए।**

वो घूँसा जिसने एक ज़िंदगी बदल दी

'**व लम्मा बलग़ अशुद्दहू वस्तवा अतैनाहु हुक्मंव्-व 'इल्मा** — और जब वो **पूरी ताक़त** और **पुख़्तगी** को पहुँचा, हमने उसे **फ़ैसला** और **इल्म** दिया।'

और फिर, बेटा, वो वाक़िआ। मूसा (अलैहि0) शहर में एक बे-परवाही के वक़्त दाख़िल हुए और दो आदमियों को लड़ते पाया — एक उनकी अपनी क़ौम का, एक दुश्मन का। उनके आदमी ने मदद के लिए पुकारा, और मूसा (अलैहि0) ने दूसरे को अपनी मुट्ठी से मारा — और वो आदमी मर गया।

'**क़ाल हाज़ा मिन 'अमलिश्-शैतान** — उसने कहा: **ये शैतान के अमल से है** — **इन्नहू 'अदुव्वुम्-मुज़िल्लुम्-मुबीन** — बेशक, वो एक खुला, गुमराह करने वाला दुश्मन है।'

'**क़ाल रब्बि इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िर ली** — **उसने कहा: मेरे रब, बेशक मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, तो मुझे बख़्श दे** — **फ़-ग़फ़र लह** — **और उसने उसे बख़्श दिया** — **इन्नहू हुवल्-ग़फ़ूरुर्-रहीम** — बेशक, वो बख़्शने वाला, रहीम है।'

बेटा, इसकी रफ़्तार देखिए। उसने अपनी सफ़ाई नहीं दी — दे सकता था: वो एक मज़लूम का दिफ़ा' कर रहा था, उसका क़त्ल का इरादा न था। उसने फ़ौरन इसे नाम दिया, किसी और पर इल्ज़ाम न लगाया, और माफ़ी माँगी। **और माफ़ी उसी साँस में आ गई।**

और बख़्शे जाने पर उसका ख़ूबसूरत जवाब: '**क़ाल रब्बि बिमा अन्'अम्त 'अलय्य फ़-लन अकून ज़हीरल्-लिल्-मुज्रिमीन** — मेरे रब, जो **एहसान** तूने मुझपर किया, उसके बदले **मैं कभी मुजरिमों का मददगार न बनूँगा।**'

बेटा, यही माफ़ी का अस्ली शुक्र ऐसा दिखता है: **मुस्तक़बिल के बारे में एक अह्द, सिर्फ़ माज़ी पर सुकून नहीं।**

फिर एक आदमी शहर के दूर के किनारे से दौड़ता आया, उसे ख़बरदार करते हुए कि सरदार उसे क़त्ल करने की साज़िश कर रहे हैं। बेटा, फिर ग़ौर कीजिए — एक गुमनाम आदमी, दौड़ता हुआ, शहर के **दूर** के किनारे से, ज़ाती ख़तरे पर सही काम करता हुआ। क़ुरआन ऐसे लोगों की इज़्ज़त करता रहता है।

'**फ़-ख़रज मिन्हा ख़ाइफ़ंय्यतरक़्क़ब** — तो वो शहर से **डरते** और **निगरानी** करते **निकल** गया — **क़ाल रब्बि नज्जिनी मिनल्-क़ौमिज़्-ज़ालिमीन** — उसने कहा: मेरे रब, मुझे ज़ालिम क़ौम से **बचा ले।**'

मेरे रब, मैं किसी भी भलाई का मोहताज हूँ

और अब, बेटा, पूरे क़ुरआन की सब से महबूब दुआओं में से एक — एक आदमी ने अपनी ज़िंदगी के सब से निचले मुक़ाम पर की।

मूसा (अलैहि0) पैदल मिस्र से भागे, सहरा पार, बिना सामान, बिना मंज़िल, बिना मंसूबे। वो मदयन के पानी पर पहुँचे और चरवाहों को अपने रेवड़ को पानी पिलाते हुए भीड़ करते पाया, और दो औरतें पीछे खड़ी, अपनी भेड़ें रोक कर।

'**क़ाल मा ख़त्बुकुमा** — उसने कहा: **तुम दोनों** का क्या मामला है? **क़ालता ला नस्क़ी हत्ता युस्दिरर्-रि'आ** — उन्होंने कहा: हम तब तक पानी नहीं पिलाते जब तक चरवाहे अपने रेवड़ **न हटा** लें — **व अबूना शैख़ुन कबीर** — और हमारा **बाप एक बूढ़ा आदमी** है।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: एक पीछा जाता मफ़रूर, थका और भूका, और पहुँचते ही उसका पहला अमल ये है कि वो दो लोगों को मुश्किल में देखता और पूछता है कि क्या मसला है।

'**फ़-सक़ा लहुमा — तो उसने उनके लिए (रेवड़ को) पानी पिलाया — सुम्म तवल्ला इलज़्-ज़िल्लि — फिर वो साए में हट गया।**'

बेटा, और अदब देखिए: उसने उनकी मदद की और फिर हट गया। कोई गुफ़्तगू नहीं, शुक्रिये का इंतेज़ार नहीं, ठहरना नहीं। **उसने काम किया और एक तरफ़ हो गया।**

और फिर उसने दुआ की: '**फ़-क़ाल रब्बि इन्नी लिमा अन्ज़ल्त इलय्य मिन ख़ैरिन फ़क़ीर — मेरे रब, जो भलाई भी तू मुझपर उतार दे, मैं उसका मोहताज हूँ।**'

बेटा, इस दुआ को देखिए और अपनी बाक़ी ज़िंदगी के लिए इस से सीखिए।

वो नाम नहीं लेता कि वो क्या चाहता है। वो नहीं कहता 'मुझे खाना दे' या 'मुझे पनाह दे' या 'मुझे सलामती दे' — हालाँकि उसे तीनों की शिद्दत से ज़रूरत थी। वो बस कहता है: **जो भलाई भी तू भेजे, मैं उसका मोहताज हूँ।**

ये मुकम्मल भरोसा है, बेटा। वो चुनाव अल्लाह पर छोड़ देता है। वो कह रहा है: तू मेरी हालत जानता है, तू जानता है क्या बेहतर है, और मैं ख़ास करने की गुस्ताख़ी न करूँगा।

और देखिए अल्लाह ने उस एक जुमले के जवाब में क्या भेजा। उन औरतों में से एक लौट आई, शर्म से चलती हुई, और बोली: मेरे बाप आपको बुलाते हैं ताकि वो आपको

(रेवड़) पानी पिलाने का सिला दें। उसे मिला: एक खाना। सलामती। आठ से दस साल का रोज़गार। एक घर। एक बीवी। एक ससुर जो एक नेक आदमी था। और एक दहाई की सहरा में चरवाही की ट्रेनिंग, जो ठीक वही तैयारी है जो एक आदमी को एक क़ौम की उस में से क़ियादत करने से पहले चाहिए।

बेटा, **उसने 'किसी भी भलाई' माँगी। अल्लाह ने उसे एक पूरी ज़िंदगी दे दी।**

और लौट आने वाली औरत का बयान ग़ौर कीजिए: '**तम्शी 'अलस्तिह्या**' — हया के साथ, शर्म के साथ चलती हुई। और उसके बाप का बर्ताव ग़ौर कीजिए: उसने एक अजनबी को साए में बैठे न छोड़ा; उसने उसे बुलाया और साफ़ कहा क्यों।

और बेटी का उसे नौकरी पर रखने का मशवरा मशहूर है, बेटा: '**या अबतिस्-तअ्जिर्हु** — ऐ मेरे बाप, **इसे नौकरी पर रख लो** — **इन्न ख़ैर मनिस्-तअ्जर्तल्-क़विय्युल्-अमीन** — **बेशक, सब से बेहतर जिसे तुम रख सको वो ताक़तवर और अमानतदार है।**'

बेटा, उस जुमले को याद कर लीजिए: '**अल-क़विय्युल-अमीन**' — सलाहियत वाला, और अमानतदार। दो सिफ़ात, और आपको **दोनों** चाहिए। एक ताक़तवर आदमी बिना अमानतदारी के अपनी सलाहियत आपके ख़िलाफ़ इस्तेमाल करेगा। एक अमानतदार आदमी बिना सलाहियत के काम नहीं कर सकता। चाहे आप किसी को नौकरी दे रहे हों, कोई शरीक चुन रहे हों, या शादी का फ़ैसला कर रहे हों — यही मेयार क़ुरआन देता है।

तुम जिसे चाहो उसे हिदायत नहीं दे सकते

मूसा (अलैहि0) ने फिर अपनी मुद्दत पूरी की, और वापसी के सफ़र में पहाड़ की जानिब एक आग देखी — और वहाँ उन्हें नुबुव्वत, लाठी, सफ़ेद हाथ, और फ़िरऔन के पास जाने का हुक्म दिया गया। और उन्होंने अपने भाई हारून (अलैहि0) से मदद माँगी, और वो अता हो गया।

सूरह आगे फ़िरऔन का ग़ुरूर बयान करती है — उसने हामान को अपने लिए एक बुर्ज बनाने का हुक्म तक दिया ताकि वो 'मूसा के ख़ुदा' को देख सके — और उसका

अंजाम: '**फ़-अख़ज़्नाहु व जुनूदहू फ़-नबज़्नाहुम फ़िल्-यम्म** — तो हमने उसे और उसके लश्करों को पकड़ा और उन्हें समंदर में फेंक दिया।'

और फिर, बेटा, एक आयत आती है जो नबी ﷺ के एक ज़ाती ग़म के बारे में उतरी।

उनके चचा अबू तालिब ने बरसों उनकी बड़ी क़ीमत पर हिफ़ाज़त की थी, और वो उनसे बे-हद मोहब्बत करते थे। जब अबू तालिब मर रहे थे, नबी ﷺ ने उन्हें तौहीद के अल्फ़ाज़ कहने की ताकीद की, और उन्होंने न कहे।

और अल्लाह ने नाज़िल किया: '**इन्नक ला तह्दी मन अह्बब्त व लाकिन्नल्-लाह यह्दी मंय्यशा — बेशक, तुम जिसे चाहो उसे हिदायत नहीं दे सकते, मगर अल्लाह जिसे चाहे हिदायत देता है — व हुव अअ्लमु बिल्-मुह्तदीन** — और वो हिदायत पाने वालों को बेहतर जानता है।'

बेटा, ये आयत हर उस शख़्स के लिए है जो किसी अपने प्यारे को हिदायत देने की कोशिश से थक चुका — एक बच्चा, एक वालिद, एक शरीक, एक भाई-बहन, एक दोस्त।

आप पहुँचा सकते हैं। आप एक ख़ूबसूरत नमूना बन सकते हैं। आप दुआ कर सकते हैं। **आप हिदायत को एक दिल में रख नहीं सकते** — और अल्लाह ने अपने ही रसूल ﷺ को ये बताया, उस चचा के बारे में जिसने उन्हें पनाह दी थी।

बेटा, इस आयत में अज़ीम सुकून है अगर आप इसे क़ुबूल करें। **नतीजा कभी आपकी ज़िम्मेदारी न था। आपका काम कोशिश और दुआ है।** दुआ करते रहिए — और नतीजा सौंप दीजिए।

क़ारून, और आख़िरत का घर

और अब, बेटा, सूरह क़ारून की कहानी सुनाती है — मूसा (अलैहि0) की अपनी क़ौम का एक दौलतमंद आदमी।

'**इन्न क़ारून काना मिन क़ौमि मूसा फ़-बग़ा 'अलैहिम** — बेशक, क़ारून मूसा की क़ौम से था, मगर उसने उन पर **ज़ुल्म** किया — **व अतैनाहु मिनल्-कुनूज़ि मा इन्न**

मफ़ातिहहू ल-तनू-उ बिल्-'उस्बति उलिल्-क़ुव्वह — और हमने उसे इतने **ख़ज़ाने** दिए कि उनकी **कुंजियाँ** ही **ताक़तवर** आदमियों के एक गिरोह पर **भारी** होती थीं।'

बेटा, ख़ज़ाना नहीं — सिर्फ़ **कुंजियाँ** कई ताक़तवर आदमियों का बोझ थीं।

और उसकी क़ौम ने उसे ख़ूबसूरती से नसीहत की: '**ला तफ़्रह इन्नल्-लाह ला युहिब्बुल्-फ़रिहीन** — **इतरा** मत; अल्लाह इतराने वालों को पसंद नहीं करता — **वब्तग़ि फ़ीमा अताकल्-लाहुद्-दारल्-आख़िरह** — **और जो अल्लाह ने तुझे दिया उस में से आख़िरत का घर तलाश कर** — **व ला तन्स नसीबक मिनद्-दुन्या** — **और दुनिया में से अपना हिस्सा मत भूल** — **व अह्सिन कमा अह्सनल्-लाहु इलैक** — **और भलाई कर जैसे अल्लाह ने तुझपर भलाई की** — **व ला तब्ग़िल्-फ़साद फ़िल्-अर्ज़** — **और ज़मीन में फ़साद मत ढूँढ।**'

बेटा, ये एक आयत में दौलत का मुकम्मल फ़ल्सफ़ा है। इसे आख़िरत के लिए इस्तेमाल करो। यहाँ अपना जायज़ हिस्सा नज़र-अंदाज़ मत करो। लोगों से भलाई करो जैसे अल्लाह ने तुमसे भलाई की। और अपने मुक़ाम को फ़साद के लिए इस्तेमाल मत करो।

और क़ारून का जवाब वो सब से मशहूर जुमला है जो कभी किसी अमीर आदमी ने कहा: '**क़ाल इन्नमा ऊतीतुहू 'अला 'इल्मिन 'इन्दी** — **उसने कहा: ये मुझे सिर्फ़ उस इल्म की वजह से दिया गया जो मेरे पास है।**'

बेटा, ये रहा: **मैंने ये कमाया।** मेरी महारत, मेरी ज़ेहानत, मेरी मेहनत। हर नस्ल के अमीरों ने इसकी कोई न कोई शक्ल कही है।

फिर वो अपने पूरे ठाठ-बाट के साथ अपनी क़ौम के सामने निकला, और जो दुनियावी ज़िंदगी चाहते थे आह भर कर बोले: '**या लैत लना मिस्ल मा ऊतिय क़ारून** — काश हमारे पास भी वही होता जो क़ारून को दिया गया!' मगर जिन्हें इल्म दिया गया था उन्होंने कहा: '**वैलकुम सवाबुल्-लाहि ख़ैरुल्-लि-मन आमन व 'अमिल सालिहा** — **तुम पर अफ़सोस! अल्लाह का अज्र बेहतर** है उस के लिए जो ईमान लाए और नेक अमल करे।'

'**फ़-ख़सफ़्ना बिही व बि-दारिहिल्-अर्ज़** — **तो हमने उसे और उसके घर को ज़मीन**

में धँसा दिया — **फ़-मा काना लहू मिन फ़ि-अतिंय्यन्सुरूनहू मिन दूनिल्-लाह** — और उसके लिए अल्लाह के सिवा कोई गिरोह न था जो उसकी मदद करे — **व मा काना मिनल्-मुन्तसिरीन** — न वो ख़ुद को बचा सकने वालों में से था।'

और अगली सुब्ह, बेटा, वही लोग जिन्होंने एक दिन पहले उसपर रश्क किया था बोले: '**वै-क-अन्नल्-लाह यब्सुतुर्-रिज़्क़ लि-मंय्यशा-उ मिन 'इबादिही व यक़्दिर** — क्या हैरत — अल्लाह अपने बंदों में जिसे चाहे रिज़्क़ **फ़राख़** करते और (जिसे चाहे) **तंग** करते हैं — **लौला अम्-मन्नल्-लाहु 'अलैना ल-ख़सफ़ बिना** — अगर अल्लाह का एहसान हम पर न होता, तो वो **हमें भी** धँसा देते।'

बेटा, एक रात ने उनके ज़ेहन बिल्कुल बदल दिए। जिसपर उन्होंने शाम को रश्क किया था, उस से सुब्ह तक बच जाने पर वो शुक्र-गुज़ार थे। **इसे अगली बार याद रखिए जब आप किसी की ज़िंदगी देखें और चाहें कि वो आपकी होती।**

और फिर वो आयत जो सब कुछ समेट लेती है: '**तिल्कद्-दारुल्-आख़िरतु नज्'अलुहा लिल्-लज़ीन ला युरीदून 'उलुव्वन फ़िल्-अर्ज़ि व ला फ़साद** — **वो आख़िरत का घर हम उन के लिए मुक़र्रर करते हैं जो ज़मीन में बुलंदी (बरतरी) या फ़साद नहीं चाहते** — **वल्-'आक़िबतु लिल्-मुत्तक़ीन** — **और (बेहतरीन) अंजाम परहेज़गारों का है।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए एक शख़्स को क्या ना-अहल करता है: **दूसरों से ऊपर होने की चाहत।** दौलत ख़ुद नहीं — क़ारून का जुर्म 'बग़्य' और "उलुव्व' था, ज़ुल्म और बरतरी की तलब।

और सूरह ख़त्म होती है: '**कुल्लु शै-इन हालिकुन इल्ला वज्हह** — **हर चीज़ फ़ना होने वाली है सिवाए उसके चेहरे के** — **लहुल्-हुक्मु व इलैहि तुर्जऊन** — उसी का हुक्म है, और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।'

बेटा, ये फ़िरऔन के महल, क़ारून की कुंजियों, और उस हर चीज़ पर आख़िरी लफ़्ज़ है जिसकी आपको आज फ़िक्र है। **हर चीज़ फ़ना हो जाती है सिवाए उसके — तो ख़ुद को उस हिस्से से जोड़ो जो बाक़ी रहता है।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. ज़ालिम लोगों को गिरोहों में बाँटते हैं — और अल्लाह एक ज़ालिम के अपने घर को उस शख़्स को पालने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं जो उसे ख़त्म करेगा।

2. कभी इताअत का मतलब डरते हुए अमल करना होता है — सुकून अमल के साथ आता है, उस से पहले नहीं।

3. उन से माँगो कि वो तुम्हारा दिल बाँध दें जब वो बिखर रहा हो: 'रबत्ना 'अला क़ल्बिहा'।

4. अपनी ग़लतियाँ फ़ौरन मानो, माफ़ी माँगो, और उसे मुस्तक़बिल के एक अह्द में बदलो।

5. मूसा (अलैहि0) की दुआ सीखो: 'रब्बि इन्नी लिमा अन्ज़ल्त इलय्य मिन ख़ैरिन फ़क़ीर' — ख़ास मत करो; चुनाव उस पर छोड़ो।

6. उस हर शख़्स का मेयार जिसपर तुम टिकते हो: 'अल-क़विय्युल-अमीन' — सलाहियत वाला और अमानतदार।

7. तुम हिदायत को एक दिल में रख नहीं सकते, सिर्फ़ कोशिश और दुआ — और आख़िरत उन के लिए है जिन्हें किसी से ऊपर होने की चाहत नहीं।

या अल्लाह, मुश्किल में हमारे दिल बाँधिए, जो भलाई आप चुनें वो हमें भेजिए, और हमें किसी से ऊपर होने की ख़्वाहिश से पाक रखिए। आमीन।